ISSN: 2278-4632
Vol-14, Issue-1, No.01, January: 2024

औपनिवेशिक शोषण और भारतीय राष्ट्रवाद

डॉ. अमित कुमार ताम्रकार,
(सहायक प्राध्यापक, इतिहास), स्वामी विवेकानंद शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नरसिंहपुर (म.प्र.), भारत

सारांश–
भारत में ब्रिटिश राज्य की स्थापना के साथ आर्थिक विनाश की प्रक्रिया प्रारंभ होती है। ब्रिटिश शासन के अधीन भारत की कहानी एक अवबाधित आर्थिक विकास की कहानी है। भारतीय अर्थव्यवस्था विकासीय प्रवृत्तियों एवं प्रेरणाओं को खो चुकी थी। और एक अर्द्ध निष्प्रवाहित अवस्था की ओर तीव्र गति से बढ़ रही थी। ब्रिटिश काल में भारत में आर्थिक संक्रमण हो रहा था। ब्रिटिश राज्य के प्रारंभिक काल में भारत आर्थिक विनाश की ओर तीव्र गति से बढ़ रहा था। औपनिवेशिक शोषण के परिणामस्वरुप भारतीयों में राष्ट्रवाद की भावना और राष्ट्रीय आंदोलन पनपा। साम्राज्यवादी शासकों को समस्त देश के लिए एक–सी प्रशासन प्रणाली स्थापित करने पर बाध्य होना पड़ा और उन्होंने सैनिक संरक्षण तथा आर्थिक शोषण के लिए सड़कों, रेलों तथा डाकतार की सुचारू व्यवस्था स्थापित की। इससे भारत में एकता स्थापित हुई और एकता की भावना जागी। आंग्ल शिक्षित मध्यम वर्ग का उदय और समाचार पत्रों का विकास हुआ। इन सभी ने राष्ट्रवाद, जातीयता, राजनीतिक अधिकार इत्यादि आधुनिक धारणाओं को बढ़ावा दिया और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जैसी संपूर्ण भारत के लिए एक राजनीतिक संस्था के लिए आधार बनाया।

की–वर्ड –
पुनर्जागरण, साम्राज्यवाद, ईस्ट इंडिया कम्पनी, इंग्लैण्ड, भारत, आर्थिक शोषण, धन का निष्कासन, राष्ट्रवाद।

उत्तरे यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम् ।
वर्षम् तद् भारतम नाम भारती यत्र संततिः।।

–विष्णु पुराण 2/3.1

– जो समुद्र के उत्तर तथा हिमालय के दक्षिण में स्थित है वह भारतवर्ष है और वहां के निवासी भारती अर्थात भरत संततियां हैं। विष्णु पुराण की यह उक्ति पूर्णतः स्पष्ट करती है कि आदि काल से भारत एक राष्ट्र रहा है और है। इसकी राष्ट्रीयता एक ही रही है। इसकी संस्कृति भी एक ही रही है – धर्म और धर्मावलंबी चाहे जितने भी रहे हों आज भी इसकी एक ही संस्कृति है। देश की समान प्राकृतिक सीमाओं ने यहां के निवासियों के मस्तिष्क में समान मातृभूमि की भावना जागृत की है। मौलिक एकता का विचार यहां बना रहा है तथा इसने देश के राजनैतिक आदर्शों को प्रभावित किया है। यद्यपि व्यवहार में राजनीतिक एकता बहुत कम स्थापित हुई है तथापि राजनीतिक सिद्धांत के रूप में इसे इतिहास के प्रत्येक युग में देखा जा सकता है। सांस्कृतिक एकता अधिक सुस्पष्ट रही है। भाषा, साहित्य, सामाजिक तथा आर्थिक आदर्श इस एकता के प्रमुख माध्यम रहे हैं। भारतीय इतिहास के अति प्राचीन काल से ही हमें इस मौलिक एकता के दर्शन होते हैं। महाकाव्य तथा पुराणों में इस संपूर्ण देश को 'भारतवर्ष' अर्थात भरत का देश तथा यहां के निवासियों को 'भारती' (भरत की संतान) कहा गया है। प्राचीन काल में भारत को सप्त सैंधव प्रदेश और आर्यावर्त भी कहा जाता था। जैसा कि हमने प्रारंभ में ही उल्लेख किया है, विष्णु पुराण में स्पष्टतः एकता की अभिव्यक्ति हुई है।

भारत की स्थिति बहुत शोचनीय है उसकी स्थिति स्वामी तथा दास से भी अधिक बुरी है। यह लूट की एक ऐसी अवस्था है जहां सब कुछ क्षमा कर दिया जाता है। वे लुटेरे जो भारत में अंग्रेजों से पहले आए, आकर चले जाते थे और उसके पश्चात भारत को पर्याप्त समय मिल जाता था जिसमें वह पुनः अपनी हानि की पूर्ति करने तथा समृद्ध बनने में सफल हो जाता था। परंतु अब तो ऐसा नहीं है। अंग्रेजों का भारत पर आक्रमण चल रहा है, लूट जारी है, कोई विराम नहीं, अपितु बढ़ रही है और निर्धन देश को संभलने का कोई अवसर ही नहीं है।

"दादा भाई नौरोजी"

Copyright @ 2024 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-14, Issue-1, No.01, January: 2024

यूरोप में पुनर्जागरण के परिणाम स्वरूप राष्ट्र– राज्य, पूंजीवाद, वाणिज्यवाद एवं औद्योगिक क्रांति का उद्‌भव हुआ। जिसने अंततः साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद को जन्म दिया। उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद का अर्थ है मूल लोगों पर विदेशी शासन तथा प्रभुत्व का आरोपण। साम्राज्यवाद तथा उपनिवेशवाद दोनों एक ही थैली के चट्टे – बट्टे हैं। दोनों ही उपनिवेश के लोगों के जीवन, अर्थव्यवस्था तथा संस्कृति को बर्बाद करने तथा उसका शोषण करते हैं।

पुनर्जागरण के परिणामस्वरूप मानवतावाद, तर्क बुद्धि, शिक्षा, साहित्य, कला, विज्ञान, व्यापार वाणिज्य, वैज्ञानिक आविष्कार एवं भौगोलिक खोज इत्यादि को बढ़ावा मिला। जिसके कारण अनेक यूरोपीय देशों ने विश्व के अन्य देशों के साथ व्यापार प्रारंभ किया। भारत के साथ भी अनेक यूरोपीय देशों ने व्यापारिक संबंध स्थापित किए। अंग्रेज भी व्यापार के उद्देश्य से भारत आए थे।

भौगोलिक खोजों का संसार के विभिन्न देशों के व्यापारिक संबंधों पर गहरा प्रभाव पड़ा। संसार के अनेक देशों में आपसी संपर्क स्थापित हुए। इसी प्रयास में पुर्तगाली कैप्टन वास्कोडिगामा 17 मई 1498 ई. को भारत के पूर्वी तट पर स्थित बंदरगाह कालीकट पहुंचा। इस प्रकार भारत के लिए एक नया यूरोपीय समुद्री मार्ग खोजा गया।[7] कालीकट के राजा जमोरिन ने पुर्तगालियों को अपने राज्य में व्यापार करने की अनुमति दे दी। कुछ ही वर्षों में पुर्तगालियों ने भारतीय व्यापार से इतना धन कमाया कि उसे देखकर यूरोप के अन्य जातियों में भी धन लिप्सा जागृत हो उठी। अतः उन्होंने भी भारत के साथ व्यापार करने के लिए अपनी–अपनी कंपनियां स्थापित की। लंदन के अंग्रेज व्यापारियों ने भी ईस्ट इंडिया कंपनी स्थापित की।

अन्य यूरोपियों की भांति अंग्रेजों ने भी व्यापारिक लाभ के उद्देश्य से अपनी कोठियां भारत में स्थापित की। और इनका भी अन्य यूरोपीय जातियों से व्यापार को लेकर संघर्ष भी हुआ। अंग्रेजों ने बंगाल में अपनी प्रथम कोठी (गोदाम) 1651 ई. में हुगली में स्थापित की। शीघ्र ही अंग्रेजों ने कासिम बाजार, पटना तथा अन्य स्थानों पर कोठियां बना ली। और कलकत्ता में फोर्ट विलियम की स्थापना हुई। 1717 ईस्वी में फर्रुखसियर ने ईस्ट इंडिया कंपनी को कई सुविधाओं वाला फरमान जारी किया। जिससे अंग्रेजों को अनेक व्यापारिक लाभ प्राप्त हुए।

1757 ई. का प्लासी का युद्ध एवं 1764 ई. का बक्सर के युद्ध में अंग्रेजों की विजय हुई। प्लासी के युद्ध में बंगाल में अंग्रेजों की शक्ति को सुदृढ़ किया तथा बक्सर के युद्ध ने उत्तरी भारत में, तथा अब वे समस्त भारत पर दावा करने लगे थे। बक्सर का युद्ध भारतीय इतिहास में निर्णायक सिद्ध हुआ। विजयी अंग्रेजों ने दक्षिण की तीनों शक्तियों निजाम, मैसूर तथा मराठों को भी परास्त किया कर दिया कर दिया। अंग्रेजों ने 1843 ई. में सिंध तथा 1849 ई. में पंजाब को मिला लिया, उसी वर्ष दक्षिणी वर्मा भी अंग्रेजी साम्राज्य का भाग बन चुका था। 19वीं शताब्दी में साम्राज्यवादी अंग्रेज भारत के चारों ओर देशों पर अपना प्रभुत्व बनाने तथा अपनी पकड़ दृढ़ करने में लगे रहे।

भारत में ब्रिटिश राज्य की स्थापना के साथ आर्थिक विनाश की प्रक्रिया प्रारंभ होती है। ब्रिटिश शासन के अधीन भारत की कहानी एक अवबाधित आर्थिक विकास की कहानी है। भारतीय अर्थव्यवस्था विकासीय प्रवृत्तियों एवं प्रेरणाओं को खो चुकी थी। और एक अर्द्‌ध निष्प्रवाहित अवस्था की ओर तीव्र गति से बढ़ रही थी। ब्रिटिश काल में भारत में आर्थिक संक्रमण हो रहा था। ब्रिटिश राज्य के प्रारंभिक काल में भारत आर्थिक विनाश की ओर तीव्र गति से बढ़ रहा था।

1765 ई. की इलाहाबाद की संधि के द्वारा शाहआलम ने क्लाइव को बंगाल की दीवानी सौंप दी थी अर्थात अंग्रेजों को राजस्व एकत्र करने का अधिकार दे दिया था। अंग्रेजों की लूट खसोट की नीति ने लगभग एक शताब्दी के अंतर्गत भारत के ग्रामीण तथा नगरीय हस्तशिल्पों एवं उद्योग के साथ–साथ पृथक एवं आत्मनिर्भर गावों का आर्थिक एवं सामाजिक संगठन ध्वस्त कर दिया। भारत के उद्योग को विनष्ट करके इसे ब्रिटेन की एक कृषि पृष्ठभूमि बना दिया।

ईस्ट इंडिया कंपनी ने भूमि अधिग्रहण की पद्धतियां बदल दी। स्थाई बंदोबस्त, रैयतवाड़ी तथा महालवाड़ी पद्धतियों का जो रूप ईस्ट इंडिया कंपनी ने गठित किया, वह कुछ विकृत ही नहीं था बल्कि भूमि पर कितना बोझिल था कि कृषक को भरपेट रोटी भी नहीं मिलती थी। और वह स्थानीय साहूकार के ऋण के नीचे दबा रहता था।

Copyright @ 2024 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-14, Issue-1, No.01, January: 2024

अंग्रेजों ने भारतीय जुलाहों को इतना कम मूल्य देना आरंभ कर दिया कि उन्होंने बढ़िया कपड़ा ही बनाना बंद कर दिया। कुटीर उद्योगों के ह्रास में अंग्रेजी औद्योगिक क्रांति की मुख्य भूमिका थी। मशीन का सस्ता माल और बढ़िया होता था, अतएव कुटीर उद्योग ठप्प हो गए।

जब से भारत अंग्रेजों का उपनिवेश बना था उसके समस्त व्यापार का नियंत्रण इंग्लैंड के हित में होता था। आयात तथा निर्यात करों को इंग्लैंड के हित में घटाया या बढ़ाया जाता था। इंग्लैंड से आने वाले माल पर आयात कर कम और इंग्लैंड से इतर देशों के माल पर आयात कर दुगुना। यही परिस्थिति निर्यात की थी अर्थात लाभ केवल इंग्लैंड को ही होता था भारतीय उत्पादकों को अथवा उपभोक्ताओं को नहीं।

भारत के धन का अविरल प्रवाह इंग्लैंड की ओर था, जिसके बदले भारत को पर्याप्त आर्थिक, व्यापारिक अथवा भौतिक फल नहीं मिला, ऐसे धन को भारतीय राष्ट्रीय नेताओं तथा अर्थशास्त्रियों ने धन के निष्कासन की संज्ञा दी है। निकास के तत्व निम्न है –पहला ग्रह व्यय, इस्ट इंडिया कंपनी के भागीदारों को लाभांश, विदेश में लिए गए सार्वजनिक ऋण, सैनिक तथा असैनिक व्यय तथा इंग्लैंड में भंडार वस्तुओं की खरीद। दूसरा विदेशी पूंजी निवेश पर दिया जाने वाला ब्याज। तीसरा विदेशी बैंक, इंश्योरेंस, नौवहन कंपनियों का लाभ इत्यादि। इन सभी साधनों के द्वारा भारत का धन जिस प्रकार से ब्रिटेन की ओर जा रहा था, उसी को धन की निकासी के नाम से जाना गया।

सर्वप्रथम दादा भाई नौरोजी ने इस ओर ध्यान आकृष्ट किया। उन्होंने 2 मई 1867 ई. को लंदन में आयोजित ईस्ट इंडिया एसोसिएशन की बैठक में अपने पेपर जिसका शीर्षक 'England's debt to India' को पढ़ते हुए पहली बार धन के निष्कासन के सिद्धांत को प्रस्तुत किया। दादा भाई नौरोजी ने धन के निष्कासन को ''अनिष्टों का अनिष्ट'' की संज्ञा दी है। 'महादेव गोविंद रानाडे' ने कहा है कि ''राष्ट्रीय पूंजी का एक तिहाई हिस्सा किसी ना किसी रूप में ब्रिटिश शासन द्वारा भारत से बाहर ले जाया जाता है।'' 'रमेश चंद्र दत्त' ने भी अपनी पुस्तक 'इकोनामिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया' में इस संबंध में अपने विचार रखे थे और 27 फरवरी 1901 ई. को अपने भाषण में कहा कि 'भारत से हो रही धन की निकासी का उदाहरण आज तक विश्व के किसी भी अन्य देश में ढूंढने से नहीं मिलता।'

धन निकासी के विषय में आर.सी. दत्त ने कहा है कि 'भारतीय राजाओं द्वारा कर लेना तो सूर्य द्वारा भूमि से पानी लेने के समान था जो कि पुनः वर्षा के रूप में भूमि पर उर्वरता देने के लिए वापस आता था पर, अंग्रेजों द्वारा लिया गया कर फिर भारत में वर्षा न करके इंग्लैंड में ही वर्षा करता था।'

अंग्रेजों द्वारा भारत का किया गया शोषण तीन भागों में बांटा जा सकता है –प्रथम काल 1756 ई. से 1812 ई. तक माना जाता है। इस समय अर्थव्यवस्था में व्यापारिक पूंजी का साम्राज्य था। ईस्ट इंडिया कंपनी ने व्यापार पर पूर्ण अधिकार जमा रखा था। कंपनी के अधिकारी जी भर कर भारत को लूट रहे थे। ब्रिटिश इतिहासकार 'पर्सिवल स्पीयर' ने टिप्पणी की, ''अब बंगाल में खुला तथा बेशर्म लूट का काल आरंभ हुआ।'' प्रसिद्ध भारतीय इतिहासकार 'के. एम. पनिक्कर' ने 1765 ई. से 1772 ई. के काल को ''डाकू राज्य'' कहा है। द्वितीय काल 1813 ई. से 1857 ई. के मध्य मुक्त व्यापार एवं पूंजी के साम्राज्यवाद का काल था। इस समय का भारत ब्रिटेन में निर्मित वस्तुओं के लिए बाजार एवं कच्चे माल के स्रोत के रूप में प्रसिद्ध था। इस काल में भारत के लघु एवं कुटीर उद्योग का पतन हुआ। इस संदर्भ में 'कार्ल मार्क्स' ने कहा था कि ''सूती कपड़ों के घर में सूती कपड़ों की भरमार कर दी गई है।'' तृतीय काल में 1857 ई. से 1947 ई. के मध्य वित्तीय पूंजी का साम्राज्यवाद अपनी जड़ें भारत में जमाने का प्रयत्न करने लगा। यहां के उद्योगों में अंग्रेजों द्वारा भारी मात्रा में पूंजी निवेश किया जाने लगा।

यदि उद्योग पंगु हो जाए, यदि कृषि पर अत्यधिक कर भार हो और यदि देश के राजस्व का एक तिहाई देश के बाहर चला जाए तो विश्व का कोई भी देश स्थाई रूप से दरिद्र और अकालग्रस्त हो जाएगा। यदि ऐसी परिस्थितियों में भारत विकास कर लेता तो, यह एक महान आश्चर्य होता। भारत ब्रिटिश आर्थिक नीतियों के कारण ही दरिद्र हुआ।

''श्री रमेश चंद्र दत्त''

भारत में ब्रिटिश सत्ता का एकमात्र उद्देश्य औपनिवेशिक शोषण करना था। इसी शोषण को प्रभावी बनाने के लिए उसने पाश्चात्य शिक्षा का भारत में प्रसार किया। जो भारत में 'राष्ट्रवाद' के विकास के

Copyright @ 2024 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-14, Issue-1, No.01, January: 2024

प्रमुख कारणों में एक उप उत्पाद के रूप में था। यदि कोई समुदाय अपने भीतर राष्ट्रीय चेतना तो विकसित कर चुका हो, परंतु उसके देश पर किसी साम्राज्यवादी या उपनिवेशवादी शक्ति का आधिपत्य हो, तो वह अपने – आपको स्वाधीनता के संघर्ष के लिए संगठित कर सकता है। इस गतिविधि को 'राष्ट्रीय आंदोलन' की संज्ञा दी जाती है। संक्षेप में राष्ट्रवाद अपने – आपको राष्ट्र के प्रति व्यक्ति की निष्ठा को सर्वोपरि स्थान देता है।

राष्ट्रवाद एक भावना का संकेत भी देता है, विचारधारा का संकेत भी देता है एक भावना के रूप में यह अपने राष्ट्र के प्रति व्यक्ति के अनुराग या लगाव को व्यक्त करता है। इस अर्थ में राष्ट्रवादी वह है जो राष्ट्र–हित को अन्य सब हितों से ऊंचा स्थान देता है। एक विचारधारा के रूप में राष्ट्रवाद यह मांग करता है कि राज्य का ढांचा और राजनीतिक संगठन राष्ट्रत्व की नींव पर खड़ा होना चाहिए; और प्रत्येक राज्य को किसी स्वाधीन राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करना चाहिए। जो लोग अपने – आपको एक स्वाभाविक समुदाय के रूप में पहचानते है, और एक राष्ट्र के सदस्य होने का दावा करते है, उन्हें अपनी पसंद की राजनीतिक प्रणाली में रहने का अधिकार होना चाहिए; उन्हें विश्व समुदाय में अन्य राष्ट्रों के बराबर का दर्जा मिलना चाहिए; और किसी राष्ट्र को किसी अन्य राष्ट्र के प्रभुत्व या आधिपत्य में रहने के लिए विवश नहीं होना चाहिए।

औपनिवेशिक शोषण के परिणामस्वरुप भारतीयों में राष्ट्रवाद की भावना और राष्ट्रीय आंदोलन पनपा। साम्राज्यवादी शासकों को समस्त देश के लिए एक–सी प्रशासन प्रणाली स्थापित करने पर बाध्य होना पड़ा और उन्होंने सैनिक संरक्षण तथा आर्थिक शोषण के लिए सड़कों, रेलों तथा डाकतार की सुचारू व्यवस्था स्थापित की। इससे भारत में एकता स्थापित हुई और एकता की भावना जागी। आंग्ल शिक्षित मध्यम वर्ग का उदय और समाचार पत्रों का विकास हुआ। इन सभी ने राष्ट्रवाद, जातीयता, राजनीतिक अधिकार इत्यादि आधुनिक धारणाओं को बढ़ावा दिया और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जैसी संपूर्ण भारत के लिए एक राजनीतिक संस्था के लिए आधार बनाया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस बीसवीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में प्रौढ़ हो गई और इसने अंग्रेजों के भारत पर राज्य करने के तर्क को चुनौती देनी आरंभ कर दी। स्वराज की मांग तो आनी आवश्यक ही थी।

भारतीय राष्ट्रवाद का विकास अंग्रेजों के मन को कभी नहीं भाया। उन्होंने एक हजार एक साधनों से इसको निष्फल तथा शक्तिहीन बनाने का प्रयत्न किया। अंग्रेज शासक वर्ग कांग्रेस को हिंदू संस्था ही मानता रहा और उन्होंने मुसलमानों को राजनीतिक आंदोलन से दूर रखने का प्रयत्न किया। केंद्रीय तथा प्रांतीय विधानसभाओं तथा परिषदों और स्थानीय इकाइयों में भिन्न–भिन्न जातियों के लिए स्थानों का संरक्षण, सरकारी पदों, पुलिस, सेना, छोटी–बड़ी सेवाओं सभी में धर्म के अनुपात में स्थानपूर्ति करना, अर्थात 'फूट डालो और राज करो' की नीति' और सांप्रदायिकता को उभारकर जो कि 1909 ई., 1919 ई. के अधिनियम और '1932 ई. के सांप्रदायिक निर्णय' में स्पष्ट रूप से सामने आता है।

इन सभी साधनों से उन्होंने भारत में स्वस्थ राजनीतिक तथा सामाजिक जीवन को विषैला बनाने का प्रयत्न किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने भारतीय राजनीतिक जीवन में भारतीय राजाओं को एक तीसरी इकाई के रूप में लाकर खड़ा किया यही नहीं इसमें बड़े–बड़े ज़मींदार और अनुसूचित जातियां भी थी । इस प्रकार अंग्रेजी नीतियों ने भारतीय राष्ट्रवाद के मूल पर ही कुठाराघात किया और 1947 में भारत छोड़ने से पूर्व इसको तो स्वतंत्र भागों (भारत तथा पाकिस्तान) में बांटकर आने वाले समय के लिए एक स्थाई युद्ध स्थल बना दिया। भारत के विभाजन ने देश में राष्ट्रवाद के विकास पर यह प्रश्न– चिन्ह लगा दिया कि भारत में राष्ट्रवाद का विकास पूर्णतः नहीं हो पाया है।

वर्तमान समय में भी भारत में राष्ट्रवाद अभी तक अपनी परिपक्व स्थिति में नहीं पहुंच पाया है, क्योंकि आज देश आतंकवाद, नक्सलवाद, उग्रवाद, अलगाववाद जैसी राष्ट्र विरोधी ताकतों से आंतरिक और बाह्य तौर पर जूझ रहा है। जो भारतीय लोकतंत्र और संविधान को चुनौती प्रस्तुत कर रहा है। जो कहीं न कहीं यह प्रदर्शित करता है कि आजादी के इतने समय के बाद भी हम अपनी शिक्षा पद्धति, मूल्यों, संस्कारों इत्यादि के माध्यम से अपने नागरिकों में राष्ट्रीय भावना विकसित करने में पूरी तरह से सफल नहीं हो पाए है। जिसका फायदा उठाकर राष्ट्र विरोधी ताकतें और हमारे देश के दुश्मन उन्हें प्रलोभन

Copyright @ 2024 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-14, Issue-1, No.01, January: 2024

देकर अपने ही देश के विरुद्ध उनका इस्तेमाल करते हैं जिससे हमारी लोकतांत्रिक छवि पर बुरा असर पड़ता है।

''राष्ट्रवाद पूरा राजनीतिक कार्यक्रम नहीं है; राष्ट्रवाद एक ऐसा धर्म है जो ईश्वर की देन है। राष्ट्रवाद तुम्हारी आत्मा का संबल है यदि तुम राष्ट्रवाद के समर्थक हो तो तुम्हें धार्मिक आस्था के साथ राष्ट्र की आराधना करनी होगी। तुम्हें यह याद रखना होगा कि तुम ईश्वर की योजना के निमित्त मात्र हो।''

'श्री अरविंद'

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 पांडे श्रीधर, आधुनिक भारत का इतिहास, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी 2010।
2 ग्रोवर बी.एल., यशपाल, आधुनिक भारत का इतिहास, एस चंद एंड कंपनी लिमिटेड नई दिल्ली, 2003।
3 खुराना एवं शर्मा, विश्व का इतिहास, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल आगरा, 2015।
4 जैन एवं माथुर, आधुनिक विश्व इतिहास, जैन मंदिर जयपुर, 2001।
5 शर्मा एल.पी., भारत का इतिहास, (1526 ई.–1967 ई.) लक्ष्मीनारायण अग्रवाल आगरा, 2018।
6 ठाकुर एग्नेस, भारत का आर्थिक इतिहास, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी भोपाल, 2003।
7 जैन डॉ. संजीव, आधुनिक भारत का आर्थिक एवं राजनीतिक इतिहास, (1707 ई. से वर्तमान तक) कैलाश पुस्तक सदन भोपाल, 2008।
8 गाबा ओम प्रकाश, राजनीतिक चिंतन की रूपरेखा, मयूर पेपरबैक्स नोएडा, 2003।

Copyright @ 2024 Author